वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रकाशित

गुरुवार, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी, कलियुग वर्ष ५१२६ (२० जून, २०२४)

# वैदिक उपासना

राष्ट्र एवं धर्मके पुनरूत्थान हेतु समर्पित ऑनलाईन दैनिक वृत्त पत्र

धर्माचरण हेतु कष्ट उठाना, राष्ट्र हेतु समय देना एवं साधना हेतु त्याग करना, यह सनातन उपासना है।

e-mail : upasanawsp@gmail.com, website : www.vedicupasanapeeth.org.

इस वृत्तपत्रको आप हमारे जालस्थल www.vedicupasanapeeth.org पर जाकर भी प्रतिदिन पढ सकते हैं।

## पंचांग

जयतु जयतु हिन्दुराष्ट्रं

२१ जून २०२४ का वैदिक पंचांग

कलियुग वर्ष – ५१२६ / विक्रम संवत – २०८१ / शकवर्ष - १९४६..कलके पंचांगके सम्बन्धमें और जानकारी हेतु इस लिंकपर जाएं…...https://vedicupasanapeeth.org/hn/panchang-21062024

## गुरु वन्दना

**त्वं माता सर्वलोकानां देवदेवो हरिः पिता।**
**त्वयैतद्विष्णुना चाम्ब जगद् व्याप्तं चराचरम्॥**

**अर्थ :** तुम सम्पूर्ण लोकोंकी माता हो तथा देवोंके देव भगवान हरि पिता हैं। हे माते ! तुमसे और श्रीविष्णु भगवानसे यह सकल चराचर जगत व्याप्त है।

## श्रीगुरु उवाच

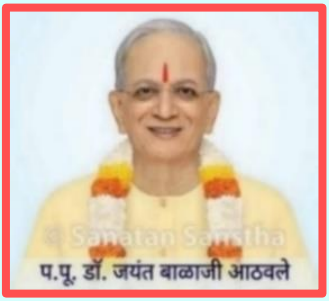


अनेक बार, विविध सन्त एवं सम्प्रदायोंकी धार्मिक मासिकमें सन्त, सिक्थ-वर्तिकासे (मोमबत्तीसे) दीप प्रज्वलन कर रहे हैं, इस प्रकारका छायाचित्र प्रसिद्ध होते हुए हमें दिखाई देता है। दीप प्रज्वलन, तमोगुणी सिक्थ-वर्तिकासे नहीं; अपितु सात्त्विक तेलके दियेसे (सकर्ण दीप) करना चाहिए, यह धर्मशास्त्र कहता है । सन्तोंको धर्मशिक्षण नहीं होनेके कारण और भारतीयोंपर अंग्रेजोंकी ईसाई संस्कृतिकी पकड होनेके कारण, उनसे सिक्थ-वर्तिकासे दीप प्रज्वलन करने जैसी अशास्त्रीय कृति होती है। इससे समझमें आता है कि हिन्दू धर्ममें, सन्तोंको भी धर्मशिक्षण देनेकी कितनी आवश्यकता है ? **- सच्चिदानन्द परब्रह्म डॉ. जयंत आठवले, संस्थापक, सनातन संस्था**

**साभार : मराठी दैनिक सनातन प्रभात**

(https://sanatanprabhat.org)

## शास्त्र वचन

**पर अकाजु लगि तनु परिहरहिं।**
**जिमि हिम उपल कृषिदलिगरहिं॥**
**बंदउ खल जस सेष सरोषा ।**
**सहस बदन बरनई पर दोषा॥**

**अर्थ :** जैसे ओले, खेतीका नाश करके स्वयं भी गल जाते हैं,

वैसे ही दुष्ट, अन्योंका कार्य बिगाडनेके लिए अपना शरीरतक छोड देते हैं । मैं दुष्टोंको (सहस्र मुखवाले) शेषजीके समान समझकर प्रणाम करता हूं, जो पराए दोषोंका, सहस्र मुखोंसे, बडे रोषके साथ वर्णन करते हैं ।

**********

**विधि हरि हर कबि कोबिद बानी ।**
**कहत साधु महिमा सकुचानी ॥**
**सो मो सन कहि जात न कैसें ।**
**साक बनिक मनि गुन गन जैसें ॥**

**अर्थ :** ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कवि और पण्डितोंकी वाणी भी सन्त-महिमाका वर्णन करनेमें सकुचाती है; वह मुझसे किस प्रकार कही जा सकती है ? जैसे शाक-तरकारी बेचनेवालेसे, मणियोंके गुणसमूह नहीं कहे जा सकते ।

## धर्मधारा

**१.** आजकल पालकोंको अपने बच्चोंकी परीक्षाका बहुत अधिक तनाव होता है । अनेक बार तो अभिभावक, साधना और सेवा भी इसीके कारण छोड देते हैं कि उनके बच्चोंकी दसवीं या बारहवींकी परीक्षा है । इतना ही नहीं, कुछ तो अपने बच्चोंको साधना और सेवासे इस कालमें दूर कर देते हैं । वस्तुतः आज

अधिकांश बच्चोंको गर्भसे ही अनिष्ट शक्तियोंका कष्ट होता है; ऐसेमें मैंने पाया है कि परीक्षाके समय, युवाओंको अधिक कष्ट होते हैं, विशेषकर जब वे अपने विद्यालयीन जीवनके किसी महत्त्वपूर्ण परीक्षाको दे रहे हों। मैंने देखा है कि जिनके घरपर आध्यात्मिक कष्ट होता है, उनके बच्चोंका परीक्षाके समय अस्वस्थ हो जाना, परीक्षामें प्रश्नपत्र मिलनेपर कुछ भी स्मरण न रहना, तनाव या आत्मविश्वासकी न्यूनताके कारण, उत्तर जानते हुए भी सब लिख नहीं पाना या परीक्षामें यथोचित प्रयास करनेपर भी यश न मिलना, जैसे कष्ट होते हैं। वस्तुतः माता-पिताको ऐसे कालमें, अपने बच्चोंको और अच्छेसे साधना करने हेतु प्रेरित करना चाहिए; किन्तु उन्हें स्वयं भी अनिष्ट शक्तियोंका कष्ट होता है; अतः वे अनिष्ट शक्तियोंका माध्यम बनकर, अपने बच्चोंको साधनासे दूरकर, उनके जीवनको अन्धकारमय बना देते हैं। ऐसे ही माता-पिताको, कलियुगी माता-पिता कहते हैं और इनके बच्चे या तो इन्हें ही दुःख देते हैं या अपने बच्चोंको दुःखी देखकर ये स्वयं दुःखी होते हैं। वैसे वे इसीके पात्र होते हैं।

**********

## २. वाणी, मन एवं काया शुद्धि हेतु क्या करें ?

वाणीकी सिद्धि हेतु सत्यका अनुसरण करना चाहिए। अनेक सिद्धोंको वाक् सिद्धि होती है, यह उनके इस जन्म या पूर्व जन्मके धर्मपालन या साधनाका परिणाम होता है।

जो भी वचन बोले जाएं, वे व्यवहारमें पूर्ण हों, वचन कभी व्यर्थ न जाए, सदैव सत्य ही बोलना चाहिए। प्रत्येक शब्दका महत्त्वपूर्ण अर्थ हो, वाक् सिद्धियुक्त व्यक्तिमें श्राप एवं वरदान देनेकी क्षमता होती है। यह सत्य बोलनेकी शक्ति है। यदि स्वतन्त्रता पश्चात पाठ्यक्रमोंमें ऐसी बातें सिखाई गई होतीं, तो

आज समाजमें असत्य बोलनेवाले लोगोंका प्रमाण इतना अधिक नहीं होता।

सन्तोंका लेखन पढने, सुनने या मनन-चिन्तन करनेसे, मनोदेह (मनकी) एवं कारणदेहकी (बुद्धिकी) शुद्धि होती है; इसलिए पूर्वकालमें, लोग प्रतिदिन धर्मशास्त्रोंके पठन-पाठन हेतु अपनी दिनचर्यामें अवश्य ही समय रखते थे; इसलिए सभीका विवेक जाग्रत रहता था।

भिन्न प्रकारके योगमार्गोंसे साधना करके भी, स्थूल एवं सभी सूक्ष्म देहोंकी (मन, बुद्धि व अहंकी) पूर्ण शुद्धि सम्भव नहीं, यह मात्र गुरुकी कृपासे ही सम्भव होता है और उस कृपाको पाने हेतु भावपूर्वक, चूकविरहित गुरुसेवा करनी चाहिए। उपर्युक्त तथ्योंकी पुष्टि हेतु शास्त्र कहता है -

**सत्येन शुध्यति वाणी मनो ज्ञानेन शुध्यति।**
**गुरुशुश्रूषया काया शुद्धिरेषा सनातनी॥**

**अर्थ :** वाणी, सत्यसे; मन, ज्ञानसे तथा काया, गुरुकी सेवासे शुद्ध होती है - ये सनातन शुद्धियां हैं।

**********

## ३. सत्सङ्गके परिणामकारक लाभ हेतु करें ये उपाय !

वैदिक उपासना पीठके द्वारा, 'ऑनलाइन' सत्सङ्ग आरम्भ हो चुका है। यदि आप इस सत्सङ्गमें सहभागी होते हैं, तो सत्सङ्गमें बौद्धिक रूपसे सिखाए जानेवाले विषय और शब्दातीत स्तरपर प्रक्षेपित चैतन्यका पूर्ण लाभ लेनेके लिए निम्नलिखित तथ्योंको आचरणमें लानेका प्रयास करें -

**अ.** सत्सङ्गमें बैठनेसे पूर्व ही 'नमक'-पानीका उपाय करें, जिससे सत्सङ्गके चैतन्यको आप ग्रहण कर सकें। मैंने देखा है कि कुछ लोगोंको अत्यधिक आध्यात्मिक कष्ट होनेके कारण वे, जैसे ही सत्सङ्ग आरम्भ होता है, वे सोने लगते हैं और इसी

कारण वे, सत्सङ्गमें उपस्थित रहना टालते हैं। 'नमक'-पानीका उपायकर, सत्सङ्गमें बैठनेसे, मन एवं बुद्धिपर छाया आवरण नष्ट हो जाता है एवं अध्यात्मका बौद्धिक भाग ग्रहण होता है। साथ ही, आवरण अल्प रहनेके कारण सत्सङ्गका चैतन्य भी अधिक मात्रामें ग्रहण होता है।

**आ.** सत्सङ्गमें बैठनेसे दो घण्टे पूर्वसे ही, अपने आराध्यसे प्रार्थना करें, जिससे कि आप सत्सङ्गके चैतन्यको ग्रहण कर सकें।

**इ.** सत्सङ्ग आरम्भ होनेसे पूर्व गणेशजी, जो बुद्धिके देवता हैं, उन्हें और मां सरस्वती, जो विद्याकी देवी हैं, उनसे प्रार्थना करें कि हमारे मन एवं बुद्धिपर जो भी आवरण हों, वे नष्ट हों और सत्सङ्गको हम मन, बुद्धि एवं चैतन्यके स्तरपर ग्रहणकर, उसे अपने जीवनमें उतार सकें।

**ई.** सत्सङ्गके मध्य भी नामजप एवं प्रार्थनामें निरन्तरता बनाए रखें।

**उ.** वर्तमान समयमें, अनिष्ट शक्तियोंका कष्ट अत्यधिक बढ गया है। ऐसेमें यदि सत्सङ्गमें बैठनेके पश्चात कुछ शारीरिक कष्ट हो रहा हो, तो एकाग्रतापूर्वक नामजप और प्रार्थना करें और वहांसे उठे नहीं, बैठे ही रहें। इससे थोडे समय पश्चात आपके कष्ट घट जाएंगे।

फरवरी २०११ में, मैं देहलीमें एक घरमें सत्सङ्ग ले रही थी, तो सत्सङ्गमें बैठे एक साधकको कष्ट होने लगा। उन्हें थरथराहट होने लगी, स्वेद (पसीना) आने लगा और लगा कि सत्सङ्गसे उठकर भाग जाएं; परन्तु वे नामजप और प्रार्थनाके बलपर बैठे रहे।

अगले दिन उन्होंने पाया कि उनके पन्द्रह वर्ष पुराने चर्मरोगसे प्रभावित पांवमें, ८०% सुधार था और अगले तीन

दिनोंमें उनका चर्मरोग पूर्णतः समाप्त हो गया, जिसमें पिछले पन्द्रह वर्षोंसे खुजली होती थी और रक्त निकला करता था। उन्हें 'एक्जिमा' था। वास्तविकता यह थी कि उस साधकको अनिष्ट शक्तियोंका कष्ट था। सत्सङ्गके चैतन्यसे, उन्हें कष्ट देनेवाली शक्तिको गति मिल गई और उन्हें उस कष्टसे मुक्ति मिल गई। यह सत्सङ्गका महात्म्य है।

इसीप्रकार जब मैं मई २०१२ में, बक्सरमें सत्सङ्ग ले रही थी, तब सत्सङ्ग समाप्त होनेके पश्चात तीन साधकोंने बताया कि सत्सङ्गसे पूर्व उन्हें अत्यधिक शारीरिक पीडा थी, जो सत्सङ्ग समाप्त होनेपर पूर्णतः ठीक हो गई। हमारे श्रीगुरुके अनुसार, नामजपका महत्त्व ५ प्रतिशत है और सत्सङ्गका महत्त्व ३०% प्रतिशत है; इसलिए सत्सङ्ग, नामजपके सङ्ख्यात्मक एवं गुणात्मक वृद्धि हेतु परम आवश्यक होता है।

**- (पू.) तनुजा ठाकुर, सम्पादक**

## प्रेरक प्रसंग

**एक पापसे सभी पुण्य नष्ट हो जाते हैं !**

महाभारतके युद्ध पश्चात जब श्रीकृष्ण द्वारका लौटे, तब रोषमें भरी माता रुक्मणीने उनसे पूछा, "युद्धमें शेष सब तो ठीक था; किन्तु आपने द्रोणाचार्य और भीष्म पितामह जैसे धर्मपरायण लोगोंके वधमें क्यों साथ दिया ?"

श्रीकृष्णने उत्तर दिया, "यह सही है कि उन दोनोंने जीवनभर धर्मका पालन किया; किन्तु उनके द्वारा किए एक पापने उनके सभी पुण्योंको नष्टकर दिया।"

माता बोलीं, "कौन-सा पाप ?"

श्रीकृष्ण बोले, "जब भरी सभामें द्रौपदीका चीर-हरण हो रहा था, तब ये दोनों भी वहां उपस्थित थे। बडे होनेके नाते, ये

दुःशासनको रोक भी सकते थे; किन्तु इन्होंने ऐसा नहीं किया। उनके इस एक पापसे, शेष सभी धर्मनिष्ठता न्यून पड गई।"

माता बोलीं, "और कर्ण, वह तो अपनी दानवीरताके लिए प्रसिद्ध था। उसके द्वारसे कोई रिक्त हाथ नहीं गया। उसकी मृत्युमें आपने क्यों सहयोग किया ? उससे क्या चूक हुई थी ?"

श्रीकृष्ण बोले, "हे प्रिये ! तुम सत्य कह रही हो, वह अपनी दानवीरताके लिए प्रसिद्ध था और उसने कभी किसीको 'न' नहीं कहा; किन्तु जब अभिमन्यु, सभी युद्धवीरोंको धूल चटानेके पश्चात युद्धक्षेत्रमें घायल होकर भूमिपर पडा था, तब उसने कर्णसे जल मांगा। कर्ण जहां खडा था, उसके समीप जलका एक गड्ढा था; किन्तु कर्णने मृतप्राय अभिमन्युको जल नहीं दिया; इसलिए जीवनभर दानवीरतासे अर्जित किया हुआ उसका पुण्य, नष्ट हो गया। कुछ समय पश्चात युद्धमें, उसी गड्ढेमें उसके रथका पहिया धंस गया और वह मृत्युको प्राप्त हुआ।

हे रुक्मणी ! प्रायः ऐसा होता है, जब मनुष्यके निकट कुछ अनुचित हो रहा होता है और वे कुछ नहीं करते। वे समझते हैं कि इस पापके भागी वे नहीं हैं।

यदि वे सहायता करनेकी स्थितिमें नही हैं, तो सत्य बोल तो सकते हैं कि वे कुछ नहीं कर सकते, वे सहायता करनेकी स्थितिमें नहीं हैं।

परन्तु वे ऐसा भी नहीं करते। ऐसा न करनेसे, वे भी उस पापके उतने ही भागी हो जाते हैं, जितना पाप करनेवाला होता है।"

(सङ्कलन : श्री महेन्द्र शर्मा, देहली)

## घरका वैद्य

**गिलोय (भाग-७)**

*** कानके मैलके लिए :** गिलोयको जलमें घिसकर और गुनगुना करके कानमें प्रत्येक दिन दो बार, दो बूंदें डालनेसे, कानकी मलिनता निकल जाती है और कान स्वच्छ हो जाते हैं।

*** कानकी पीडाके लिए उपयोगी :** गिलोयके पत्तोंके रसको गुनगुना करके कानमें बूंद-बूंद करके डालनेसे, कानकी पीडा नष्ट हो जाती है।

*** संग्रहणीमें (पेचिशमें) लाभदायक :** अती, सोंठ, मोथा और गिलोयको समान मात्रामें लेकर जलके साथ मिलाकर काढा बना लें। इस काढेको बीस ग्रामकी मात्रामें, प्रातः और सायं पीनेसे मन्दाग्नि (भूखका न्यून होना), सतत मलावरोधकी (कब्जकी) समस्या होना तथा (दस्त) अतिसारके साथ आंव आना इत्यादि कष्ट समाप्त हो जाते हैं।

*** मलावरोधके लिए :** दो चम्मचकी मात्रामें गिलोयका चूर्ण और गुड, एक साथ सेवन करनेसे मलावरोधका (कब्जका) दोष नष्टप्राय हो जाता है।

## उत्तिष्ठ कौन्तेय

**गन्नेके रसमें थूक मिलाकर बेच रहे थे शाहेब आलम और जमशेद खान, विरोध करनेपर दम्पतिसेकी अभद्रता**

मुसलमान समाजद्वारा सार्वजनिक रूपसे थूकका प्रयोग रोटी, तंदूर, फूल, फल, 'फेस मसाज'के साथ-साथ रसमें भी किया जा रहा है, जिसका अनुभव 'यूपी'के नोएडामें क्लियो 'काउंटी सोसाइटी'के क्षितिज भाटियाने ली, जो अपनी पत्नीके साथ 'सोसाइटी'के बाहर गन्नेका रस पीने गए थे।

नोएडा, 'सेक्टर'-१२१ स्थित 'क्लियो काउंटी'के बाहर 'जूस' बनानेवाले शाहेब आलम और जमशेद खानको भाटिया दम्पतिने २ ग्लास गन्नेका रस बनानेको कहा । इन दोनोंने 'ग्लास'में 'थूक' डालकर रस दिया, जिसे दम्पतिने देख लिया। विरोध करनेपर दोनों क्रोधित हो गए और दम्पतिके साथ अभद्रता की । दम्पतिकी परिवादके पश्चात 'यूपी पुलिस'ने कार्यवाही कर उन्हें बन्दी बना लिया है । लखनऊके सुशांत 'गोल्फ सिटी' क्षेत्रमें मोहम्मद जैदको भी इसी सम्बन्धमें बन्दी बनाया था।

**धर्मान्धोंकी रुढिवादी मानसिकता उनके 'मदरसों'में दी जानेवाली शिक्षाका परिणाम है । 'मदरसों'पर पूर्ण प्रतिबन्ध ही इस समस्याका समाधान है। (१७.०६.२०२४)**

**********

**'ईद'के अवसरपर मार्ग अवरुद्धकर धर्मान्धोंने पढी 'नमाज' : 'नेटिजन्सने 'पोस्ट'कर व्यक्त किया विरुद्ध**

'ईद'के अवसरपर देहलीके चांदनी चौक क्षेत्रमें धर्मान्धोंने (मुसलमानोंने) मार्ग अवरुद्धकर 'नमाज' पढी । देशके अन्य भागोंमें भी ऐसी ही स्थिति है। इसको लेकर सामाजिक प्रसारपर 'नेटिजन्स' बोले – ये लोग सिद्ध क्या करना चाहते हैं ?

एक समाचार अभिकरणद्वारा प्रचलित दृश्यपटमें सहस्रोंकी संख्यामें धर्मान्धोंके जनसमूहने सडकको पूर्णतः अवरुद्धकर रखा है। 'जेम्स ऑफ बिहार' नामके उपभोक्ताने प्रश्न किया, "जब हम लोग राम नवमीको उत्सव यात्रा निकालते हैं तो इन लोगोंको इतना कष्ट क्यों होता है ? आज देखो कैसे ये लोग पूरी सडकको घेरे हुए हैं ?" 'कॉन्ग ऑन बॉन्ग' नामके उपभोक्ताने प्रश्न किया कि क्या आजके दिन इन लोगोंने सभी 'मस्जिदों'को बन्दकर दिया है ?

सिंहजी नामके उपयोगकर्ताने समाचार अभिकरण 'एएनआई'को मुसलमानोंको 'श्रद्धालु' कहनेपर भी आईना दिखाया और कहा कि 'नमाजी' और 'श्रद्धालु'में बहुत भेद होता है। 'गाजियाबादको भ्रष्टाचारसे मुक्त करें' नामके उपयोगकर्ताने समाचारको 'टैग'करते हुए कहा कि वे भक्त नहीं हैं, अपितु निर्दोष पशुभक्षी, पशु हत्यारे, पर्यावरण, भूजलको प्रदूषित करनेवाले और उपद्रव उत्पन्न करनेवाले हैं। विकास पाटीदार नामके उपयोगकर्ताने कहा, "नमाज सडकपर नहीं होनी चाहिए। योगीजीको बुलाया जाए।"

**कहावत है, 'एकतामें बल है' और इसी कारण धर्मान्ध अपनी मनमानी करते हैं। अवैधानिक गतिविधियोंका भी ये सभी धर्मान्ध मिलकर समर्थन करते हैं। कठोर विधान ही इनकी मनमानी आचरणपर अंकुश लगा सकता है। (१७.०६.२०२४)**

**********

**१२वीं कक्षाके पाठ्यक्रमसे हटाए बाबरी ढांचे, गुजरात दंगोंके प्रसंग : बौखला गए धर्मान्ध 'मौलाना'**

'एनसीईआरटी'ने बहुत बडा निर्णय लेते हुए १२वीं कक्षाके राजनीति विज्ञानके पाठ्यक्रममें कुछ परिवर्तन किए हैं। 'एनसीईआरटी'के इस निर्णयपर धर्मान्धोंमें हलचल मच गई है। वास्तवमें राजनीति विज्ञानकी पुस्तकोंसे बाबरी-ढांचे और गुजरात-उपद्रवसे जुडी कुछ कथाओंको हटा दिया गया है। धर्मान्धों और कुछ राजनीतिक दलोंने इसे इतिहाससे छेडछाड बताया है; किन्तु राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदने दो टूक उत्तर दिया है कि हमें छात्रोंको उपद्रवोंके विषयमें पढाना ही क्यों चाहिए ?

परिषदके निदेशक दिनेश शकलानीके अनुसार, यदि

कोई भी विषय अप्रासंगिक है तो उसे परिवर्तित करना ही होगा। उन्होंने कहा कि पाठ्यपुस्तकोंमें जो भी परिवर्तन किए गए हैं, वे सभी तथ्यों और साक्ष्योंके आधारपर किए गए हैं। उन्होंने कहा कि हम छात्रोंको उपद्रवोंकी शिक्षा ही क्यों दें ? हम इतिहास इसलिए पढाते हैं, जिससे नूतन पीढीको उसके तथ्योंके विषयोंमें ज्ञात हो, न कि इसे युद्धका क्षेत्र बनानेके लिए। यह परिवर्तन वैश्विक है और शिक्षाके हितमें है।

इसी क्रममें 'ऑल इंडिया मुस्लिम जमात'के 'बौखलाए' हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष 'मौलाना' मुफ्ती शहाबुद्दीन बरेलवीने केन्द्र शासनपर इतिहाससे छेडछाड करने और इस्लामिक उदयके मुगल 'बादशाहों'के इतिहास, पाठ्यक्रमोंसे भी हटा दिए जानेपर, दुःख व्यक्त किया है।

**धर्मान्ध अब भी अपने इतिहासको दोहराने और जिहादी उत्पन्न करनेका स्वप्न देख रहे हैं, जो कि अब नूतन पीढीके लिए घातक सिद्ध हो रहा है। पाठ्यक्रमसे ऐसे विषयोंको निरस्त करना, केन्द्र शासनद्वारा एक उत्तम निर्णय है। (१७.०६.२०२४)**

**********

**पाकिस्तानकी 'आईएसआई' अभिकरणके गुप्तचरोंके मोहजालमें उलझ रहे भारतीय सैनिक-वैज्ञानिक**

'पाकिस्तानी' गुप्तचर अभिकरण 'आएसआई'के गुप्तचार भारतकी सुरक्षामें सेंध लगानेके लिए वैज्ञानिकों-अभियन्ताओंको लक्ष्य बना रहे हैं। 'आएसआई' गुप्तचर भारतीय युवतियोंके नामसे सामाजिक प्रसार माध्यमपर खाता बनाकर इन वैज्ञानिकोंको मोहजालमें (हनीट्रैप) फंसा रहे हैं।

टाइम्स ऑफ इंडियाके प्रतिवेदनके अनुसार, पाकिस्तानके यह गुप्तचर 'फेसबुक'पर सेजल कपूर, नेहा शर्मा,

पूजा रंजन, अनामिका शर्मा और अदिति अग्रवाल जैसे भारतीय नामोंसे मिथ्या खाता बनाते थे। 'आएसआई'के भ्रममें आनेवाले निशांत अग्रवालने भी ऐसे ही एक खातेपर विश्वास किया था। निशांत अग्रवालने सेजल नामके एक 'फेसबुक' खातेपर विश्वास करके वार्ता आरम्भ की थी। सेजल नामका यह खाता पाकिस्तानसे चलाया जा रहा था। सेजलने उसे 'हनीट्रैप' कर लिया था। निशांत अग्रवाल प्रकरणका रहस्योद्घाटन करनेवाले उत्तर प्रदेश 'एटीएस'के एक अधिकारीने इस प्रकरणमें अनेक सूचनाएं दी हैं। 'यूपी एटीएस'के एक अधिकारीने बताया है कि सेजल नामका यह खाता 'साइबर अटैक'के बारेमें भी योजना बना रहा था। सेजलने स्वयंको इंग्लैंडकी एक अभिकरणमें भर्ती करनेवालेके रूपमें निशांतको बताया था।

ज्ञातव्य हो कि निशांत अग्रवालको २०१८ में उत्तर प्रदेश 'एटीएस'ने बन्दी बनाया था। वह भारतके महत्त्वपूर्ण रक्षा कार्यक्रम ब्रह्मोसका भाग था। यहां वह एक कनिष्ठ 'सिस्टम' अभियन्ता था। उसे नागपुरमें चले अभियोगमें गोपनीय सूचनाएं साझा करनेका दोषी पाया गया है। उसे कुछ समय पूर्व आजीवन कारावासका दण्ड सुनाया गया है।

**यह गम्भीर चिन्ताका विषय है और इसके लिए मैकालेकी शिक्षा पद्धति ही उत्तरदायी है। राष्ट्रप्रेम और सनातन संस्कृतिसे युक्त शिक्षापद्धति बनाई होती तो आज देशके महत्वपूर्ण संस्थानों ऐसे समाचार न आते ? (१७.०६.२०२४)**

**********

## इंडोनेशियामें 'ईद'पर हत्याके लिए 'काऊ सैलून'में सिद्ध की जा रही 'गायें'

धर्मान्धोंके इस्लामिक त्योहार 'ईद उल अजहा'पर बकरोंके साथ ही गायोंकी भी विशेष रूपसे में हत्याकी (बलि)

जाती हैं । दक्षिण एशियाई देश इंडोनेशियासे ऐसा समाचार सामने आ रहा है कि यहांपर गायोंकी हत्या (बलि) 'ईद'पर की जाती है। इसके लिए इंडोनेशियाके जकार्तामें एक 'काऊ सैलून' खोला गया है, जहांपर हत्याके लिए गायोंको सिद्ध (तैयार) किया जाता है । 'ईद'के अवसरपर इन गायोंको बर्बरतापूर्ण ढंगसे त्योहारोंके नामपर काट दिया जाता है। ज्ञातव्य हो कि गत १५ वर्षसे ये पशुवधशाला (सैलून) चल रही है, जहांपर गायोंको 'बलि'के लिए सिद्ध किया जाता है। इस बार 'ईद'पर ५० गाय और १२० बकरियोंको हत्या के लिए लाया गया था।

गायोंको सनातन धर्ममें एक विशेष स्थान दिया गया है। गायको हम मांका स्थान देते हैं और उसकी पूजा करते हैं; परन्तु विश्वके सबसे बडे इस्लामिक देश इंडोनेशियामें इस्लामके नामपर हिन्दुओंकी आस्थाके साथ 'खिलवाड' किया जा रहा है। प्रश्न ये है कि इस्लामके नामपर गोहत्या क्यों ?

इसी भांति एक दिन पहले रविवारको गुजरातके भरुच स्थित आमोद क्षेत्रमें स्थित 'दारुल उलूम बरकत ख्वाजा'के एक 'मौलाना'ने 'सोशल मीडिया'के माध्यमसे कहा कि इस्लाममें गायकी हत्या करनेकी अनुमति है । इसके पश्चात गुजरात 'पुलिस'ने आरोपीको साम्प्रदायिक शान्ति भंग करनेके आरोपमें रविवारको (१६ जूनको) बन्दी बना लिया था।

**इंडोनेशिया तो क्या अन्य इस्लामिक देश भी सार्वजनिक रूपसे गोहत्याका समर्थन करते है। वे कहते है कि उनका पन्थ उन्हें इसकी अनुमति देता है; परन्तु ऋषि मुनियोंके देश भारतमें हिन्दू सङ्गठित होकर गोमाताको राष्ट्रपशु घोषित नहीं करवा पा रहा है और सत्तालोलुप राजनेता ऐसा स्वयंसे करनेवाले नहीं है; अतः गोमाताकी रक्षा हेतु अब हिन्दू राष्ट्र चाहिए। (१८.०६.२०२४)**

## वैदिक उपासना पीठद्वारा कुछ आवश्यक सूचनाएं

**१.** वैदिक उपासना पीठद्वारा बच्चोंको सुसंस्कारित करने हेतु एवं धर्म व साधना सम्बन्धित बातें सरल भाषामें बताने हेतु 'ऑनलाइन' बालसंस्कारवर्गका लाभ उठा सकते हैं। यह वर्ग प्रत्येक रविवार, त्योहारोंको एवं पाठशालाके अवकाशके दिन, प्रातः १० से १०:४५ तक होता है। इस वर्गमें ७ वर्षसे १५ वर्षकी आयुतकके बच्चे सहभागी हो सकते हैं। यदि आप अपने बच्चोंको इसमें सम्मिलित करने हेतु इच्छुक हैं तो पञ्जीकरण हेतु कृपया 9717492523, 9999670915 के 'व्हाट्सऐप्प'पर सन्देशद्वारा सम्पर्क करें।

**२.** वैदिक उपासना पीठके माध्यमसे जो भी जिज्ञासु या साधक साधना करनेको इच्छुक हैं, वे हमारे 'whatsapp' गुट 'साधना'से जुड सकते हैं। इसमें आपको अपनी व्यष्टि साधनासे सम्बन्धी प्रश्न, अडचनें एवं साधनाके चरणोंके प्रवासके विषयमें मार्गदर्शन दिया जाएगा। इस हेतु मुझे 'साधना' गुटमें जोडें, इस सन्देशके साथ अपना नाम और आप कहां रहते हैं ? (अपने जनपदका अर्थात डिस्ट्रिक्टका नाम) यह लिखकर भेजें। इसके माध्यमसे आप घरमें रहकर ही अपनी साधना कर सकते हैं।

**३.** आदरणीय श्रोताओं एवं पाठको, जैसा कि आपको ज्ञात ही है कि वैदिक उपासना पीठद्वारा श्री हरिहर गुरुकुलंका शुभारम्भ किया जा चुका है; एवं इस निमित्त हम विद्यार्थियोंको कुछ विषय ऑनलाइन सिखा रहे हैं, यदि आप भी ऐसे विषय सीखने हेतु इच्छुक हैं तो अपना नाम व आपके जनपद अर्थात जिलेका नाम एवं कौन सा विषय सीखना चाहते हैं, यह लिखकर व्हाट्सएप्प क्रमांक ९९९९ ६७०९१५ (9999670915) पर भेजें।

वैदिक उपासना पीठके विद्या दानका सभी उप्रकम नि:शुल्क ही होता है; अतः ये विषय भी आप घर बैठे नि:शुल्क सीख सकते हैं।

**१.** रामचरितमानस – प्रातः, प्रत्येक दिवस, ११:०० से ११:३०

**२.** संगीत – मंगलवार, गुरुवार एवं शनिवार, सन्ध्या ७:२५ से ८:००

**३.** प्राकृतिक चिकित्सा – प्रत्येक दिवस रात्रि ८:४५ से ९:००

**४.** अध्यात्मशास्त्र – शनिवार, मंगलवार एवं गुरुवार मध्याह्न (दोपहर) – ३:०० से ३:३०

**५.** साधना – प्रातः ६:०० – ७:००, रात्रि ८:३० – ९:३०

**६.** वास्तुशास्त्र – रविवार, मध्याह्न (दोपहर) – ३:०० से ३:३०

हमने सोचा कि जो विद्यार्थियोंको सिखाया जा रहा है, उसका लाभ समाज भी क्यों न ले; आशा करते हैं हमारे इस प्रयाससे आप भी निश्चित ही लाभान्वित हो पाएंगे।

**- विश्वस्त वैदिक उपासना पीठ**


प्रकाशक : Vedic Upasana Peeth
जालस्थल : www.vedicupasanapeeth.org
ईमेल : upasanawsp@gmail.com
सम्पर्क : + 91 9717492523 / 9999670915